भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन
एवं शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री

राजस्थान के झुंझनूं स्थित श्री पंचदेव मन्दिर में अवतरित बाबा गंगाराम के प्रति लोगों की आस्था दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस दिव्य ज्योति को संसार में प्रकाशमान करने वाले महान भक्त हुये हैं, 'भक्त शिरोमणि श्री देवकीनन्दन एवं शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री'। प्रस्तुत है कलियुग की इस महान विभूति के तपस्यामयी जीवन की एक झलक।

भक्ति के विलक्षण प्रभाव को दर्शानेवाली अनेकानेक घटनायें हमारे धर्मग्रन्थों एंव पुराणों में मिलती है, परन्तु इस कलिकाल में भक्ति का जो उत्कृष्ट उदाहरण विष्णुअवतारी बाबा गंगाराम के अनन्य साधक भक्त शिरोमणि श्री देवकीनन्दन एवं शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री ने प्रस्तुत किया है, वह अद्भुत एंव अविस्मरणीय है। भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन एवं उनकी धर्मपत्नी शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री भक्ति और त्याग के मूर्तिमान अवतार थे। उन्होंने झुंझनूं में बाबा गंगाराम के धाम श्री पंचदेव मंदिर की स्थापना ही नहीं की अपितु अपने त्याग, तपस्या व बलिदान से उसे पावन तीर्थ स्थल बना दिया। प्रभु चरणों में स्थान पाने से पूर्व भक्तों को अनेकों अग्नि परीक्षाओं से गुजरना होता है।

झुञ्झुनु में श्री पंचदेव मंदिर की स्थापना

भक्त देवकीनन्दन को एक रात स्वप्न में बाबा गंगाराम के विष्णुरूप में दर्शन हुये। उन्हें एक अलौकिक दृश्य दिखाई पड़ा और आकाशवाणी सुनाई पड़ी - "देवकीनंदन! तुम भक्ति का नया इतिहास लिखोगें, मेरी लीलाओं का माध्यम बनकर तुम मानव को जीवन के परम सत्य से अवगत कराओंगे। तुम्हें जनकल्याण करना है, मेरे मन्दिर का निर्माण करवाओ। मैं पंचदेवों के साथ आकर श्रीविग्रह में प्रवेश करूंगा और अपने भक्तों के सभी संकट दूर करूंगा।''

इसप्रकार बाबा गंगाराम का आशीर्वाद प्राप्त कर एवं उनके स्वप्नादेश को शिरोधार्य कर उन्होंने अपनी धर्मपत्नि परम साध्वी गायत्री देवी के साथ सन् 1975 में गंगादशहरा के शुभ दिन झुंझनूं में भव्य एंव विशाल श्री पंचदेव मन्दिर- बाबा गंगाराम धाम की स्थापना करवाई। मन्दिर में विष्णुअवतारी श्री बाबा गंगाराम, श्री शिव परिवार, आन्जनेय हनुमान, मां दुर्गा एंव महालक्ष्मी की विशाल एवं मनमोहक प्रतिमायें स्थापित की गयी। देश के कोने-कोने में मंदिर की ख्याति एवं बाबा की महिमा फैलने लगी। श्रद्धालु भक्तजन बाबा के मन्दिर में मनोवांछित फल प्राप्त लगे। सर्वत्र बाबा गंगाराम के नाम की जय जैकार होने लगी।

समस्त सम्पदा का त्याग

परन्तु भक्तिमार्ग में चलनेवालों को सदैव ही विकट विरोध व उपहास का सामना करना पड़ता हे। भक्त देवकीनंदन के कुछ स्वार्थी परिजन और धर्म विरोधी लोग उनके मार्ग के अवरोधक बन गए। बाबा गंगाराम की भक्ति में लीन देवकीनन्दनजी को धर्मपथ से डिगाने के लिये वे तरह तरह की कुटिलता करने लगे। इतिहास साक्षी है कि मीरा, नरसी, प्रहलाद आदि को सबसे अधिक कष्ट उनके परिवारजनों से ही मिला। देवकीनन्दनजी और गायत्री देवी यह सब देखकर मन ही मन अकुला उठे एवं व्यथित हो उठे। उन्होंने भक्ति का अभूतपूर्व इतिहास लिखते हुये तुलसीदल हाथ में लेकर सर्वस्व त्याग की अटल प्रतिज्ञा की और उसी क्षण उन्होंने अपनी करोड़ों की सम्पदा, चल अचल सम्पत्ति तथा सुख वैभव का परित्याग कर दिया एंव सत्पात्रों में वितरित कर दिया। इतना ही नही उनके आत्मांश दो पुत्र एंव चार पुत्रियों ने भी लौकिक भोग साधनों को पूर्णतः त्याग कर आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करने की प्रतिज्ञा की। आज के इस भोगप्रधान युग में त्याग का ऐसा उदाहरण मिलना असंभव है.

इतना ही नहीं, उन्होंने अपने दांत में लगा स्वर्ण भी असह्य पीड़ा को सहते हुये दांत सहित उखड़वा दिया. कलियुग के इस भौतिक युग में हरिश्चंद्र के समान उनका ये त्याग स्वयं एक उदाहरण बन गया। त्याग की पराकाष्ठा को प्राप्त कर उन्होंने मात्र साग के पत्ते खाकर जीवन का निर्वाह किया था, जो उनकी सत्यनिष्ठा को दर्शाता है.

चिता पर अलौकिक चमत्कार

श्री पंचदेव मंदिर के इतिहास में एक नये अध्याय का समावेश तब हुआ जब बैसाख कृष्ण चतुर्थी दिनांक 21 अप्रैल 1992 को भक्त शिरोमणि श्री देवकीनन्दन के महाप्रयाण के उपरांत उनके पार्थिव शरीर को अग्नि दी जा रही थी. उसी समय परम तपोनिष्ठ शक्तिस्वरूपा उनकी धर्मपत्नी गायत्री देवी ने सूर्य की साक्षी में द्रोपदी की भांति अपने दोनों हाथ उठाकर बाबा से सत्य का प्रमाण संसार को दिखाने के लिए करुण पुकार की और सचमुच चिता में अलौकिक चमत्कार हुआ एवं भक्त देवकीनंदन का दाहिना हाथ जलती हुई चिता से आशीर्वाद की मुद्रा में स्वतः ही ऊपर उठकर आशीर्वाद देता हुआ हिलने लगा। इसके साथ ही उनके मस्तक से जल की धारा बहने लगी और चेहरा बालरूप में परिणत हो गया। सारा वातावरण बाबा गंगाराम की जय-जयकार से गूंज उठा। जिस प्रकार भक्त हनुमान ने अपना सीना चीरकर सियाराम के दर्शन कराकर भक्ति के प्रत्यक्ष प्रभाव को दर्शाया था, उसी प्रकार भक्त

देवकीनंदन जिनके रोम-रोम में 'गंगाराम' नाम बस गया था, उनके पार्थिव शरीर से इन चमत्कारों का घटित होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री

शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री आध्यात्मिक शक्तियों से परिपूर्ण परम तपस्विनी थी। भक्त शिरोमणि देवकीनंदन के महाप्रयाण के पश्चात् मंदिर परिसर में अनवरत साधना में लीन रहते हुए उन्होंने लाखों भक्तों को उचित मार्गदर्शन व आशीर्वचन देकर उनका जीवन बदल दिया। वे करुणा, प्रेम, दया, परोपकार की साकार प्रतिमा एवं परम विदूषी थीं। सीता, अनुसुईया और सावित्री की भांति वे सत्य और त्याग की प्रतिमूर्ति थी। वे सदा भक्ति के चैतन्य लोक में रहती थी और प्रत्येक के हृदय की बात जानती थी। उनके मुख से जो भी निकला वो भक्तों के लिए मंत्र तुल्य हो गया। उनकी करुण पुकार पर भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन की चिता पर हुए चमत्कार उनकी भक्ति की पराकाष्ठा को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। अंततः वे मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी दिनांक 29 नवम्बर 2017 को बाबा की अविरल भक्ति करते-करते बाबा गंगाराम की परम ज्योत में लीन हो गई.

"आशीर्वाद मंदिर"

श्री बाबा गंगाराम के पावन धाम श्री पंचदेव मंदिर झुञ्झुनु के परिसर में 30 अप्रैल 2021 को भक्त-द्वय की साधना के मूर्तिमान स्वरूप "आशीर्वाद मंदिर" की स्थापना की गई, जो आज लाखों भक्तों की आस्था और विश्वास का केंद्र बन गया है। आशीर्वाद मंदिर में विराजमान शिव स्वरूप श्री देवकीनंदन और शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री की युगल प्रतिमा के दर्शन करते ही असीम आनंद की अनुभूति होती है। भक्तगण उनका आशीर्वाद पाकर कृतार्थ होते हैं एवं उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती है।

भक्ति और शक्ति के प्रतीक आशीर्वाद मंदिर के निर्माण से श्री पंचदेव मंदिर में मानों स्वर्ग ही उतर आया है. यही कारण है की बाबा के धाम की यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। भक्तगण दर्शन करने के पश्चात वहाँ की 'रज' को प्रसाद स्वरूप अपने साथ ले जाते है, जो सांसारिक कष्टों के निवारण हेतु कलियुग में संजीवन बूटी के समान है।

भक्त शिरोमणि श्री देवकीनंदन एवं शक्ति स्वरूपा देवी गायत्री को उनके आराध्य सभी धर्मों के एकमात्र ध्येय विष्णु अवतारी बाबा गंगाराम सहित कोटिशः नमन है।

।। भक्त और भगवान की जय।।